बृहदारण्यकोपनिषद् से एक श्लोक

जिस प्रकार मकड़ी तन्तु [जाला] बुनती है और जिस प्रकार अग्नि में से चिंगारियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार आत्मा से सर्व प्राण, सर्व लोक, सर्व देवता और सर्व प्राणी उत्पन्न होते हैं। इसका गूढ़ अर्थ है, सत्य का सत्य। परम सत्य प्राण के रूप में प्रकट हुआ है, तथा आत्मा ही प्राण की सत्यता है।

बृहदारण्यकोपनिषद् २.१.२०; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।